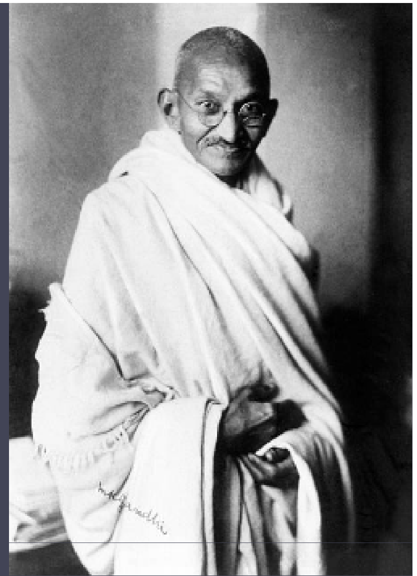

MOHANDAS KARAMCHAND GANDHI
QUALITIES OF SATYAGRAHA
UG-SEM-V, CC:11

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

जीवन परिचय

मोहनदास करमचन्द गाँधी जी का **जन्म 2 अक्टूबर 1869 में कठियाबाड़ा के पोरबन्दर** नाम स्थान पर हुआ।गाँधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा **5 वर्श की आयु में गुजरात के हिन्दी स्कूल में हुई।** तत्पश्चात् 10 वर्श की आयु में उन्हें अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश मिला। 13 वर्श की आयु में बिना किसी वैयक्तिक सहमति के **उनका विवाह 1883 में कस्तूरबाबाई से हुआ।** 17 वर्श की अवस्था में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर गाँधी जी ने अपने विद्यार्थी जीवन के उच्चतम आदर्शों का परिचय दिया। **4 सितम्बर 1882 को गाँधी जी ने बैरस्ट्री पास करने के लिए विलायत (इंग्लैंड) प्रस्थान किया** और उसके बाद बैरस्ट्री पूर्ण कर वे भारत लौटे। **16 वर्श की छोटी सी उम्र में पिता का साया उठ जाने के पशत् भी** गाँधी जी ने देश–विदेश में अपना अध्ययन जारी रखा। **मात्र 22 वर्श के थे, बैरिस्ट्री पास कर इसी वर्श से मुम्बई के कठियावाड के वकालत शुरू की।** जहाँ निवासित एक व्यापारी दक्षिण अफ्रिका में व्यापार करते थे। उन्होंने अपने मुकदमे की पैरवी के लिए **1893 में गाँधी जी को दक्षिण अफ्रिका भेजा।**

- लगभग **20 वर्शों तक अफ्रिका में रहकर अहिंसात्मक सत्याग्रह** के आन्दोलन का सर्वप्रथम प्रयोग किया, इस सारी प्रक्रिया में उन्हें **7 दिन व चौदह दिन का दो बार उपवास** रखना पड़ा और दो बार जेल भी जाना पड़ा। **सन् 1915 में देश के नेता के रूप में भारत लौटे।** भारत में अंग्रेजी सरकार की नीति के खिलाफ, सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया और देशवासियों को देश की स्वतंत्रता के लिए संगठित करने का शक्तिशाली अभियान प्रारम्भ किया। विदेशी सामाग्री का बहिश्कार, अंग्रेजी कानूनों का विरोध राश्ट्रहित के लिए उपवास एवं अनशन जेल यात्राएँ कर देश की आजादी उनके जीवन का लक्ष्य बन गयी, और **1920 में उनका सक्रिय राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हो गया।** असहयोग आन्दोलन, स्वतंत्रता, स्वाधीनता एवं भारतीयों में नवजीवन संचार करने के लिए चर्खा, खादी का प्रचार किया। **'यंग इण्डिया तथा 'नवजीवन' पत्रों का सम्पादन, हरिजन संघ की स्थापना** कर गतिविधियों में वृद्धि की।

- 1942 में भारत छोड़ा का नारा बुलंद कर अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने की दृढ इच्छा से 15 अगस्त 1947 में देश की आजादी में अहम् भूमिका का निर्वाह् किया, लेकिन स्वतंत्र भारत में गाँधी जी अधिक सांस न ले सके और **30 जनवरी 1948 ई0 को नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी हत्या कर दी गयी।** गाँधी जी के जीवन का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन आन्दोलनों से भरा पड़ा या ये कहा जाए कि उनका जीवन अत्याचार के विरुद्ध आन्दोलनों का इतिहास रहा है।

सत्याग्रह के लक्षण (qualities of satyagarh)

सत्याग्रह के प्रमुख दस लक्षणों को गाँधी जी द्वारा प्रस्तुत् किया गया हैं

- अहिंसा (Non violence)
- सत्य (Truth)
- अस्तेय (Non Stealing)
- ब्रह्मचर्य (Brahmcharya)
- अपरिग्रह (Aparigarh)
- शारीरिक श्रम (Physical labour)
- अस्वाद (Tastelessness)
- स्वदेशी (Swadeshi)
- स्पर्श भावना (Touchability)
- धाार्मिक समानता (Religious Equality)

अहिंसा (Non violence)

- दूसरों की आत्मा को दुखी न करना।

सत्य (Truth)

- दूसरों के साथ हमारी परमार्थ एकता।

अस्तेय (Non Stealing)

- व्यक्ति में आत्मसंतोश होना आवश्यक है, क्योंकि आत्मसंतोश ही अस्तेय की प्राप्ति का प्रतीक है। सामान्यतया दूसरे की अनुमति के बिना उसकी वस्तु को उठाना या उपयोग करना तो चोरी है ही, लेकिन यदि कोई व्यक्ति अपनी आव यक जरुरतों से अधिक वस्तुओं की आकांक्षा करता है। उनके लिए प्रयत्न करता है तथा उनको अपने पास रखता है तो वह भी एक प्रकार का चोरी है। आवश्यकता से अधिक अपने पास रखने का अभिप्राय हम दूसरों के अधिकार की वस्तु में हाथ डाल रहे हैं, जिसको कि इसकी जरूरत है। दूसरे की वस्तु के लिए इच्छा ही न करना, जरूरत से अधिक वस्तुओं को समेटना अस्तेय है। अतः कहा जा सकता है कि अस्तेय एक वृत्ति और प्रवृत्ति भी है। यह एक निश्ठा है। केवल आचरण नहीं। वृत्ति और आचरण की समानता के साथ अपने ही श्रम से प्राप्त वस्तु के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति की वस्तु की आकांक्षा न करना ही अस्तेय है।

ब्रह्मचर्य (Brahmcharya)

- ब्रह्मचर्य को गांधी जी ने सत्य–अहिंसा के लिए आव यक माना है। इसके प्रति उनकी धारणा सामाजिक थी। वे सार्वभौमिक प्रेम पर वि वास करते थे, जिसमें प्रेम की सीमा स्त्री–पुरुश तक ही सीमित न रहकर सबके लिए होनी चाहिए। उनके अनुसार ये तभी संभव है, जब लैंगिग सुखों का प्रयोग या उपभोग दायरे के अन्तर्गत होगा। परिवार में स्त्री की अवस्था मातृत्व की भावना से सम्पन्न होनी चाहिए, जिससे उसमें त्याग वृत्ति का विकास हो। स्त्री को व्यक्तिनिश्ठ न होकर तत्वनिश्ठ होना चाहिए। स्त्री के सहजीवन की नींव पवित्रता पर होनी चाहिए। पुरुश की वृत्ति स्त्री के प्रति अनाक्रमणशीलता की होनी चाहिए और स्त्री की निर्भीकता की। यही जीवन का आधार है। ब्रहमचर्य है, जो समाज के पतन के रास्ते से बचाने के लिए आवश्यक है।

अपरिग्रह (Aparigarh)

- गाँधी जी का विचार है कि व्यक्त्ति एवं समाज की सुख शान्ति परिग्रह या संचय करने में नहीं है, अपितु विचारपूर्वक एवं स्वेच्छा से संग्रह की हुई है। वस्तुओं, सम्पत्ति या सुख–सुविधाओं का त्याग करने में सच्ची शान्ति व सुख है, ज्यों–ज्यों परिग्रह कम होता है, मानव चिन्ताएँ कम होती जाती है तथा सच्चे सुख व शान्ति प्राप्त होती है। जहाँ ऐसा करने से व्यक्ति की आत्मा को सच्चा सुख मिलता है। वहीं समाज में धन का समान वितरण, गरीबी, भूखमरी आदि की भी समाप्ति होती है और समाज में प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूरी होने लगती है। परिग्रह का त्याग आवश्यक है, क्योंकि यह सभी बुराईयों की जड़ है।

शारीरिक श्रम (Physical labour)

- शारीरिक श्रम के सिद्धान्त के आधार पर मनुश्य को जीवित रखने के लिए श्रम आवश्यक है जो कि मस्तिश्क से नहीं शरीर से होना चाहिए। काम और आराम के बीच का अन्तर संघर्श का कारण होता है, जिसे दूर करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक श्रम आवश्यक करना चाहिए। हम जो कार्य कर सकते हैं, उसे स्वयं करना चाहिए। सामाजिक दृश्टि से भी यदि हम अपनी आवश्यकतानुसार के अनुमाप में कार्य करके खा लेते हैं तो इससे समाज में व्याप्त समस्याओं का भी समाधान हो जायेगा। पूंजीपति व श्रमिकों के बीच पाया जाने वाला संघर्श कम होगा तथा समाज में न्याय की स्थापना होगी और शोशण कम होगा। गाँधी जी के अनुसार–'व्यक्ति को धन निश्ठ न होकर श्रमनिश्ठ होना चाहिए।

अस्वाद (Tastelessness)

- शारीरिक श्रम के बदले कुछ प्राप्त करने की कामना अस्वाद है। दूसरों को खिलाकर खाना, उत्पादन पर स्वयं की जगह समाज का अधिकार मानना, आनन्द की छाया दूसरे की आँखों में देखकर आनन्दित होना अस्वाद है। अर्थात् पहले दूसरों को वितरित हो फिर यदि बचे तो मैं लूं यही भावना अस्वाद कहलाती है। गाँधी जी के अनुसार–''भोजन शरीर की आवश्यकता के लिए नहीं होना चाहिए। न कि स्वाद के लिए। यदि हम अपनी पाशिवक वृत्तियों एवं कामनाओं पर विजय पाना चाहते हैं तो हमें स्वाद का त्याग करना होगा।

स्वदेशी (Swadeshi)

- स्वालम्बन व्यक्ति के लिए अत्यंत आवश्यक व्रत है। गाँधी जी ने कहा है–''स्वदेशी ऐसी भावना है जो हमें आस–पास रहने वाले लोगों की सेवा के लिए प्रेरित करती है, जो व्यक्ति अपने निकट वालों को छोड़कर दूर वालों की सेवा के लिए दौड़ता है। वह स्वदेशी व्रत को भंग करता है। स्वयं उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग हमारा स्वाभिमान है। ऐसी भावना सत्याग्रह के लिए आवश्यक है।

स्पर्श भावना (Touchability)

- गाँधी जी के अनुसार जाति–वर्ण के बन्धन से उत्पन्न ऊँच–नीच के आधार पर पलने वाली अस्पृश्यता का सर्वोदय समाज व्यवस्था में कोई स्थान नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को अपने बराबर समझे तथा प्रत्येक व्यक्ति में स्पर्श की भावना का उदय होना चाहिए। सभी मनुश्य समान है। अतः किसी के भी उचित तरीके से जीने का अधिकार को छीनने का किसी को हक नहीं है।

धाार्मिक समानता (Religious Equality)

- विभिन्न सम्प्रदायों का निराकरण कर देना धार्मिक समानता है। गाँधी जी के अनुसार सभी धर्मों के मूल सिद्धान्त एक है, जिसका उद्देश्य सभी धर्मों को आदर की दृश्टि से देखना है। यदि इस प्रक्रिया को जीवन में लागू किया जायेगा तो धर्म परिवर्तन की समस्या का भी अन्त हो जायेगा।

- गाँधी जी ने सत्याग्रह को '**क्रान्ति का विज्ञान**' कहा है। सत्याग्रह के लिए उपरोक्त लक्षणों का पालन अनिवार्य है जो एक–दूसरे से किसी–न–किसी प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।